अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2022

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–छठा | अक्टूबर–2022

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगत मोहे पाई x 2

(1) ना को वैरी नाहीं बेगाना, सगल संग हमको बन आई x 2
बिसर गई........

(2) जो प्रभ कीनों सो भल मान्यो, ऐह सुमत साधु ते पाई x 2
बिसर गई........

(3) सब में रव रेहा प्रभ एको, पेख–पेख 'नानक' बिगसाई, x 2
बिसर गई........

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कर्मों का अंधेरा 3

(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)

फरवरी 1987, 16 पी.एस.राजस्थान

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सवालों के जवाब

सवाल–जवाब 27

19 जनवरी 1985, मुम्बई

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 247 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

Satguru Pyare Meri

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

फरवरी 1987

16 पी.एस.राजस्थान

कर्मों का अंधेरा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

DVD - 89

संसार में हमारे आगे दो ही रास्ते हैं, एक गुरुमत और दूसरा मनमत। एक मनमुख और दूसरा गुरुमुख। मनमुख, हमेशा अपने मन का कहना मानते हैं। मन हमारा जानी दुश्मन है, इस मन ने आज तक ऋषियों–मुनियों को भी नेक सलाह नहीं दी। मैं बताया करता हूँ कि भटका हुआ मन तबाही मचा देता है। गुरुमुख, गुरु ही संसार में ऐसा शख्स है जिसका अपने सेवकों और संगत के साथ बिना मतलब का प्यार होता है।

आपको पता है कि सारी दुनिया गर्ज का प्यार करती है। माता, बच्चों के साथ गर्ज का प्यार करती है। पति–पत्नी एक–दूसरे के साथ गर्ज का ही प्यार करते हैं। इसी तरह गरीबों का धनी लोगों के साथ गर्ज का ही प्यार है, जब गर्ज पूरी हो जाती है तो कौन किसे पूछता है?

कबीर साहब कहते हैं कि गुरु सबको चाहता है लेकिन गुरु को कोई नहीं चाहता। सारी दुनिया माया के नशे में कौमों–मजहबों के नशे में दीवानी हुई फिरती है। माया का नशा इतना चढ़ा हुआ है कि हम यहाँ आकर भी इन्हीं चीजों की खोज करते हैं। महात्मा का जातिय तजुर्बा है कि इस संसार का कोई भी सामान हमारे साथ नहीं जाएगा। हम जिस शरीर में बैठे हैं यह भी हमारा साथ नहीं देगा। जब शरीर ने ही साथ नहीं देना तो हम दुनिया से क्या उम्मीद लगाए बैठे हैं?

कबीर साहब कहते हैं कि पता नहीं पहले हमने कितने घर बनाए, कितने बच्चे पैदा किए, कितनी पत्नियाँ बनाई और कितने पति बनाए, जब वे हमारे साथ नहीं गए तो अब हम क्या आशा रखकर बैठे हैं? इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और मुट्ठी खोलकर संसार से चला जाता है। कोई

ऐसा जीव नहीं जो पैदा होते ही न रोता हो। डॉक्टरों का जातिय तर्जुबा है कि जो बच्चा रोता नहीं, डॉक्टर उसके माता–पिता से कह देते हैं कि यह थोड़े समय का ही है, हो सकता है जल्दी ही इसकी मृत्यु हो जाए।

जिस बच्चे में श्वास होता है, वह जन्म लेते ही रोता है क्योंकि बच्चा अंदर नूर और प्रकाश के साथ जुड़ा होता है, मालिक की जोत उसे सतह दे रही होती है, शब्द की आवाज उसे जीवन दे रही होती है। जब वहाँ से लिव टूटती है तो बच्चा फौरन चिल्लाना शुरु कर देता है। कई बार ऐसा होता है अगर बच्चा न रोए तो किसी चीज की आवाज की जाती है या अस्पताल में रखी घंटी को बजाया जाता है ताकि बच्चे का ध्यान आवाज की तरफ चला जाए।

इसी तरह बच्चा रोता है, घर के लोग खुशियां मनाते हैं, राग–रंग करते हैं और दान भी करते हैं कि परमात्मा ने हमारे घर में बच्चा दिया है, चाहे वह थोड़े समय का ही हो। कबीर साहब कहते हैं, ''तू ऐसा कर जिस तरह इन लोगों ने तेरे जन्म लेने पर खुशी मनाई थी, अन्त समय में ये तेरे पास बैठकर रोएं और तू खुशी मनाते हुए चला जाए। उनका मरना अच्छा है जिनके दिल से नाम न बिसरे, परमात्मा न बिसरे, उनकी लिव परमात्मा के साथ लगी हो।'' देखा जाता है कि बहुत कम लोग ही ऐसा करते हैं। हमें पता ही है कि शरीर को मामूली सा कष्ट आ जाए तो कोई कहता है, ''लड़कियों को बुलाओ।'' कोई कहता है, ''लड़कों को बुलाओ।'' कोई कहता है, ''वैद्य–डॉक्टरों को बुलाओ।'' उस समय कोई ऐसा वैद्य या डॉक्टर है जो हमारी जान बचा दे?

औखद आए रास जे विच आप खड़ोया

वही दवाई रास आएगी जिसमें परमात्मा खड़ा हो जाए। आखिर में परमात्मा का ही आसरा है तो क्यों न पहले ही परमात्मा को याद किया जाए, क्यों न पहले ही परमात्मा को खुश किया जाए?

वैद्य कहे हौं ही भला दारू मेरे वस
ऐह ते वस्तु गोपाल की जब भावे ले खस

यह तो उस मालिक की वस्तु है, मालिक को पता है कि मैंने इसे कितनी देर संसार में रखना है और इसे कब वापिस बुलाना है। सब सन्त–महात्माओं का जातिय तर्जुबा है कि कोई भी इस संसार में सदा नहीं रह सकता, चाहे कोई राजा है या प्रजा है, चाहे औरत है या मर्द है। कोई हमें छोड़कर चला जाता है और हम कईयों को छोड़कर चले जाएंगे। हम पेड़ों की तरफ देखते हैं कि हर साल उनके पत्ते पुराने होकर झड़ जाते हैं और कई नये पत्ते भी आँधी की रगड़ खाकर टूट जाते हैं। जिस तरह किसान खेती का मालिक है, वह कच्ची–पक्की खेती जैसी भी चाहे काट सकता है। यह उस मालिक को पता है कि मैंने इसे बूढ़ा होने पर लेकर जाना है या जवानी में ही ले जाना है। उसकी प्लानिंग को वही जानता है, क्यों न उस हस्ती को नमस्कार किया जाए।

आपके आगे गुरु अर्जुन देव जी का शब्द रखा जा रहा है आप प्यार से समझाते हैं कि हम किस तरह इस संसार में इकट्ठे हुए हैं? जिस तरह शाम को पक्षी दूर–दूर से आकर पेड़ के नीचे इकट्ठे हो जाते हैं और सुबह होते ही अपने–अपने रास्ते पर कोई दस मील तो कोई इससे भी ज्यादा दूर चोगा चुगने चला जाता है। रात को वहाँ वापिस आकर कोई आराम करता है, कोई मीठा बोलता है तो कोई कड़वा बोलता है। यही हालत इस संसार की है कि कोई घर के अंदर माता, कोई बच्चा, कोई भाई तो कोई पिता बनता है। हम एक परिवार की शक्ल बन जाते हैं, जब एक–दूसरे का देन–लेन समाप्त हो जाता है तो पति–पत्नी या बाप–बेटा बैठकर सलाह नहीं करते और यह भी नहीं बता सकते कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।

आप खुद सोचकर देखें, जिस दुनिया की खातिर हम अपने कीमती असूल कुर्बान करते है और उस परमात्मा को भूल जाते हैं लेकिन वह

परमात्मा हमें नहीं भूलता, याद रखता है। दुनिया में बड़े–बड़े डिक्टेटर हुए हैं जो यह कहते थे कि परमात्मा कहाँ है? हमारे मुँह से निकली हुई बात ही कानून है लेकिन परमात्मा उन्हें भी नहीं छोड़ता। मौत की दवाई किसी डिक्टेटर के पास नहीं है। मौत की दवाई परमात्मा ने अपने हाथ में रखी हुई है कि किसे कब लेकर जाना है? वक्त पर दिन–रात होते हैं, चाँद–सूरज अपना प्रकाश कर रहे हैं। वह भूलता नहीं अभूल है जो उसके साथ जुड़ जाते हैं परमात्मा उन आत्माओं को नहीं भूलता।

जिस तरह रात को पेड़ के नीचे सारे पक्षी रहते हैं, जब सुबह होती है वे अपने–अपने रास्ते पर चले जाते हैं। हमारी सुबह कौनसी है? महात्मा बताते हैं कि हम एक परिवार की तरह आकर रहते हैं, जब हमारी जिंदगी की रात खत्म हो जाती है तब हम भी एक–दूसरे के साथ सलाह नहीं करते, चले जाते हैं। जिस योनि के साथ हमारा लेने–देने का सम्बंध होता है, वहाँ हम पक्षियों की तरह चोगा चुगने के लिए चले जाते हैं।

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि हमारी भावनाएं ही हमें संसार में लाती हैं। कोई बंदा ऐसा नहीं जिसकी सारी ख्वाहिशें पूरी हो जाएं। किसी की दस ख्वाहिशें पूरी हो जाती हैं, पाँच अधूरी रह जाती हैं। किसी की पाँच ख्वाहिशें पूरी हो जाती हैं, दस अधूरी रह जाती हैं। आखिरी वक्त जिधर हमारा ख्याल होता है उसके मुताबिक ही हमारा अगला जन्म हो जाता है। वहाँ कई ख्वाहिशें पूरी हो जाती हैं, हर ख्वाहिश के ऊपर नई ख्वाहिशें जन्म ले लेती हैं इसी तरह हमने अपना जन्म–मरण बनाया हुआ है।

सन्त–महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि दुनिया का सिमरन बदलने के लिए आप परमात्मा का सिमरन करें, परमात्मा का ध्यान करें। सतसंगी के दिल के अंदर यही ख्वाहिश होनी चाहिए कि मैं कब अंदर पर्दा खोलकर ‘शब्द गुरु’ का प्रकाश देखूं और कब अंदर जाऊं। गौर से सुनें:

बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे।। इक तत्ते इक बोलन मिट्ठे।।
अस्त अदोत भया उठ चले ज्यों ज्यों औध विहाणीआ।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''हमारे परिवार में बेइत्तफाकी इसलिए होती है क्योंकि परिवार में सबकी आदत एक जैसी नहीं होती। कोई खट्टा बोलता है, कोई मीठा बोलता है, कोई गरम बोलता है इसलिए हमारे परिवार में खटपटी मची रहती है लेकिन जब जिसका लेना-देना खत्म हो जाता है तो वह अपने-अपने रास्ते पर चला जाता है।''

पाप करेंदड़ सरपर मुट्ठे। अजराईल फड़े फड़ कुट्ठे।।
दोजक पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ।।

जब हम दान-पुण्य या कोई अच्छा काम करते हैं तो पंडितों, भाईयों से जाकर पूछते हैं कि कौनसा दिन, कौनसी तारीख अच्छी है। वे हमें अपनी बुद्धि के मुताबिक बताते हैं लेकिन पाप करते वक्त हम किसी के साथ सलाह नहीं करते। हम सोचते हैं कि परमात्मा को हमारे पाप का पता नहीं लेकिन हम जो दान-पुण्य करते हैं उसका पता देना बहुत जरूरी है। अगर हमारे पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्गों में बैठे होते अगर पाप ही पाप होते तो हम नर्कों में सड़ रहे होते। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

पाप पुण्य की है यह नगरिया, सो उबरे जो सतगुरु शरणईया

यह पापों और पुण्यों की देह है। जिसके ज्यादा पुण्य है वह ज्यादा सुखी नजर आता है। जिसके ज्यादा पाप हैं वह दुखों और बीमारियों से घिरा हुआ है। ऐसा कोई आदमी नहीं, जिसने सारी जिंदगी दुख न देखे हों, सुखी रहा हो या सारी जिंदगी सुख ही देखे हों दुख न देखे हों। हम जिदंगी में बैठकर दुख भी देखते हैं और सुख भी देखते हैं। यह हमारे किए हुए कर्मों का नतीजा है।

सन् 1947 में हिन्दुस्तान आजाद हुआ, हमारी आर्मी को दिल्ली लालकिला में जाने का मौका मिला। हमें लालकिला के बारे में जानकारी दी गई कि यह किला शाहजहाँ ने बनवाया था, शाहजहाँ बहुत अच्छा बादशाह था। गाईड ने हमें शाहजहाँ के मनोरंजन की सारी जगह दिखाई। ऐसा ख्याल था कि वह जीते जी स्वर्गों में था। आखिर में जब यह बताया कि उसके लड़के ने ही उसे कैद किया, वह जेल में ही शरीर त्याग गया।

यह अपनी-अपनी समझ होती है। यह सुनकर मेरे पैरों के नीचे से मिट्टी खिसक गई और मुझे बुखार हो गया कि जिसने इतना सुख देखा हो, जो हिन्दुस्तान का बादशाह हो आखिर उसका ऐसा कौनसा कर्म था? बेशक हम कितनी भी हुकूमत हासिल कर लें, हम जिंदगी में बैठकर सुख और दुख, सब कुछ ही देखते हैं।

किए पाप रखे तले दरड़ाए प्रकट भए नादान जब पूछे धर्मराय

यहाँ तो हम लोगों में अच्छे बन जाते हैं। पैसे और हुकूमत के जोर पर कहते हैं कि हम बिल्कुल साफ हैं लेकिन जो परमात्मा हमारे अंदर बैठा है उसे किसी गवाही की जरूरत नहीं वह सब जानता है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं, ''वह हाथी से पहले चींटी की पुकार सुन लेता है।''

सिरजनहार परमात्मा ने बनिया धर्मराज की ड्यूटी लगाई है कि तूने हर एक का सच्चा न्याय करना है। धर्मराज हमारे कर्मों का हिसाब-किताब देखता है और उसके मुताबिक हमें अगला शरीर दे देता है या दोजक में डाल देता है। आप दिमाग से यह ख्याल ही निकाल दें कि हमसे कोई पूछने वाला नहीं या हम जो कुछ करते हैं वह माफ हो जाएगा। चाहे कोई कितनी भी बड़ी पदवी का मालिक हो उसे मौत के बाद परमात्मा के सामने पेश होना पड़ता है और अपने किए हुए कर्मों का, पुण्य और पापों का बोझ उठाकर उस दरबार में जाना पड़ता है।

संग न कोई भईआ बेबा ।। माल जोबन धन छोड़ वञेसा।।
करण करीम न जातो करता तिल पीड़े ज्यों घाणीआ।।

महात्मा न तो हमें डराते हैं कि आप नर्कों से डरकर भक्ति करें और न ही हमें लालच देते हैं कि आप स्वर्ग की आशा रखकर भक्ति करें। जो कुछ हो रहा है, आपकी आँखों के सामने हो रहा है। कोई भाई-बहन, माँ आपके साथ नहीं होंगे। हम आम घरों में मौत होती हुई देखते हैं कि कोई किसी के साथ नहीं जाता। हमारे बुजुर्गों के साथ कोई नहीं गया तो हमारे साथ कौन जा सकता है? आपके साथ आपका शरीर भी नहीं जाएगा, इसे भी हम मिट्टी या अग्नि के सुपुर्द कर जाएंगे। कबीर साहब कहते हैंः

जब जलिए ते होई भस्म तन रहे किरम दल खाई

यह तन जल जाता है तो राख की मुट्ठी बन जाती है अगर इसे कब्र में दफना देते हैं तो कब्र में इसे कीड़े खा जाते हैं। कोई तेरे साथ नहीं जाएगा। हम दुनिया का जितना भी धन-दौलत इकट्ठा करते हैं, मुल्कों की हुकूमत हासिल कर लेते हैं इसे भी छोड़कर चले जाना है। इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ खोलकर चला जाता है। हजरत बाहु कहते हैंः

ईक विछोड़ा माँ प्यो भाईया, दूजा अजाब कब्र का हू

एक तो माता-पिता का बिछोड़ा होगा, दूसरा कब्र का डर होगा। हम यहाँ कितने बड़े-बड़े मकान बनाते हैं, चौड़े पलंग बनाते हैं लेकिन जब मौत आती है तो अंदर मन गवाही दे देता है, आगे कब्र भी दिखाई देती है, अग्नि भी दिखाई देती है। पास बैठे भाई-बहनों के आगे रोता है लेकिन उस समय क्या हो सकता है? तुलसी साहब कहते हैंः

लगे टिकटिकी दिसे न भाई, वहाँ समय की कौन दिखाई।

आप कहते हैं कि अंदर टिकटिकी लग जाती है। न अंदर किसी को बता सकता है, न बाहर किसी को बता सकता है। जुबान से बोलकर उस समय की अवस्था को बयान नहीं कर सकता।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि देखो प्यारेयो, अन्त समय में कोई आपकी मदद करने वाला नहीं होगा। धन–दौलत हमारा तब तक साथ देता है जब तक हमारी जुबान चलती है, जब जुबान बंद हो जाती है तो धन–दौलत बैंको में पड़ा रह जाता है। इसी तरह माता–पिता, औरत साथी होते हैं लेकिन मौत आने पर सभी कहते हैं कि अब इसे घर से निकालो। यह हमारी भावनाएं ही होती हैं अगर वह स्वपन में दिखाई भी दे जाए तो हम किसी साधु के पास जाते हैं कि बाबा जी, हमें तावीज दें, वह स्वपन में दिखाई देता है। गुरु परमात्मा हमारा साथी होता है लेकिन हम गुरु को नाममात्र ही याद करते हैं। कभी दिल में खुशी आई तो याद करते हैं नहीं तो कहते हैं कि समय ही नहीं है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सारा दिन मजदूरी करे, हर सिमरन वेले वज्र सिर पड़े

हमारी यही शिकायतें हैं कि भजन नहीं होता। इसमें हमने कौनसा वजन उठाना है लेकिन हमारे पाप हमें भजन की तरफ आने ही नहीं देते। बचपन, जवानी साथ नहीं देती आखिर बुढ़ापा आ जाता है।

खुस खुस लैंदा वस्त पराई।। वेखै सुणे तेरै नाल खुदाई।।
दुनिया लब पया खात अंदर अगली गल्ल न जाणीआ।।

आप प्यार से कहते हैं कि हम जो कुछ भी इन आँखों से देखते हैं इसमें से कुछ भी अपना नहीं, सब पराया है। यह शरीर जिसे हम सारी जिंदगी पालते हैं, यह भी पराया है, किराए का मकान है। आप किनसे आशा रखते हैं? जब हमें पराई चीज मिल जाती है तो हम खुश हो जाते हैं। घर में पैदाईश हो जाती है तो हम खुश हो जाते हैं लेकिन परमात्मा–खुदा जो हमारे अंदर बैठा है वह चौबिस घंटे देख रहा है, सोच रहा है कि यह कभी तो मेरी तरफ आएगा।

दात प्यारी विसरया दातारा।

दातों के साथ प्यार है लेकिन हम उस देने वाले दाता को भूल जाते हैं। वह खुदा-परमात्मा हमारे अंदर बैठा है लेकिन हम कहते हैं, ''नहीं जी अंदर हड्डी-चमड़ी और माँस ही है, अंदर सुई भी नहीं जाती तो परमात्मा कैसे हो सकता है?'' जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें बताते हैं कि अंदर ही मौत-पैदाईश है, अंदर ही पौधे को पानी देने वाला माली है जिसने यह बाग लगाया हुआ है। हम बाहर जो कुछ देख रहे हैं यह उस ब्रह्मांड का नमूना है। अंदर सच्चाई है बाहर नकल है लेकिन हम परमात्मा के साथ नहीं, नकल के साथ प्यार करते हैं।

आप कहते हैं कि परमात्मा तेरे साथ है, तू उसे देख नहीं रहा, परमात्मा की तरफ तेरी तवज्जो ही नहीं। परमात्मा ने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को बुरा बनाकर हमारे अंदर पैदा नहीं किया था लेकिन इंसान इनका गलत इस्तेमाल करता है। अगर लोभ नहीं होगा तो हम नाम नहीं जप सकते, लोभ को अच्छी तरफ लगाएं तो क्या बुरा है?

मोह नहीं होगा तो हम सन्त-सतगुरु के साथ प्यार नहीं कर सकते लेकिन हम इसका गलत इस्तेमाल करते हैं। काम का गलत इस्तेमाल करके हम बीमारियाँ लगा लेते हैं, काम भोगों में फँसकर इंसान अपनी सेहत का सत्यानाश कर लेता है। क्रोधी का मुँह लाल हो जाता है उसे जवानी में ही ब्लड प्रेशर की बीमारी हो जाती है। समझदार लोग दूर से ही कामी और क्रोधी को पहचान लेते हैं। हम इन्हें वश में करने की बजाय इनके वश में हो जाते हैं। हम इनमें स्वाद ढूंढते हैं, ये हमें बीमारियाँ दे जाते हैं।

कभी बैठकर सोचा है कि आगे कौनसा भाई-बहन या माता-पिता होंगे हम जिनके पास जाकर बैठ जाएंगे? हजरत बाहु कहते हैं, ''यहाँ माता-पिता का बिछोड़ा दुःख देगा, दूसरा कब्र का दुःख होगा वहाँ किसी ने अन्न-पानी नहीं देना।''

जम-जम मरै मरै फिर जंमै।। बहुत सजाय पया देस लंमै।।

सभी सन्त कहते हैं कि जो पैदा हुआ है वह मरता जरूर है। जो 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं करते वे मरकर जन्म जरूर लेते हैं। चौरासी का चक्कर बहुत लम्बा है यह खत्म होने में नहीं आता। अगर हम चौरासी लाख योनियों का हिसाब लगाएं तो आत्मा काँप उठती है कि इस जीव को कितनी योनियों में चक्कर लगाने पड़ते हैं।

साँप की उम्र बहुत लम्बी होती है। चौरासी लाख योनियों में बहुत सजाएं होती हैं। शिकारी तीर लेकर जानवरों के पीछे घूमते हैं, जानवर जख्मी हो जाता है, उसके ऊपर कौन मलहम लगाता है? उन्हें हांडियों में पकाया जाता है। इसी तरह अगर इनके हाथ में बंदुक हो और हम जानवर की योनि में आएं तो कितना बुरा होगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लिए दिए बिन रहे न कोय

जिन कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुख सहै पराणीआ।।

हो सकता है किसी वक्त वह जानवर सेठ-साहूकार हो, राजा-महाराजा हो लेकिन इंसानी जामें में गलतियाँ की इसलिए अब निचली योनियों में आकर छिपते फिरते हैं। आसमान में चीलें और बाज उड़ते हैं, जमीनी जानवर उनसे बहुत डरते हैं। चिड़ियां सारा दिन अपनी जिदंगी बचाती हैं लेकिन पता नहीं किस समय चील-बाज ने झपट मार लेनी है। इतने कष्ट इसलिए सहने पड़ते हैं क्योंकि इंसानी जामें में आकर पशुओं जैसे कर्म किए, परमात्मा की भक्ति नहीं की। पशु नाम नहीं जपते, उन्हें अपने-पराए का ज्ञान नहीं होता, वे आपस में लड़ते-झगड़ते हैं।

सभी समाज कहते हैं कि भक्ति करने के लिए स्नान करना जरूरी है। शरीर को पानी से धो लेते हैं यह साफ हो जाता है, इसे कोई बीमारी नहीं लगती लेकिन हम सोचते हैं कि नहाने से मुक्ति हो जाएगी। महात्मा किसी की निन्दा नहीं करते।

कोट तीर्थ मज्जन स्नाना, इस कल में मैल भरीजे

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि आप एक नहीं करोड़ों तीर्थ नहा लें, आपके शरीर की मैल उतरेगी। आत्मा की मैल उतारनी है तो नाम की कमाई करें, असली सरोवर आपका शरीर है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ऐह शरीर सरवर है सन्तों स्नान करे लिव लाए
नाम स्नान करे से जन निर्मल शब्दे मैल गँवाए

आप अंदर जाकर अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारें। ऋषि-मुनियों ने प्रयागराज को सच्चा तीर्थ कहा है। कबीर साहब उसे त्रिवेणी कहकर बयान करते हैं, गुरु नानकदेव जी महाराज उसे अमृतसर कहकर बयान करते हैं:

सच्चा अमृतसर काया माहे, मन पीवे सो पाहे पाहे हे

आप वहाँ जाकर आत्मा को स्नान करवाएं, आपकी आत्मा जन्मों-जन्मों से मैली है वहाँ जाकर यह साफ हो जाएगी। इसी तरह महात्माओं ने हमें खाना सयंम में खाने के लिए कहा है। सयंम में खाना खाने से ज्यादा बीमारियां नहीं आती लेकिन हम महीने-महीने के व्रत रखने शुरु कर देते हैं। व्रत की अहमियत को नहीं समझते और शाम को व्रत तोड़ने के बाद दोगुना खा लेते हैं। महात्माओं ने हमें समझाने के लिए जो समाज बनाए थे, हम उनका गलत इस्तेमाल करने लग गए। हर समाज कहता है कि मेरा भक्ति करने का तरीका सही है। सन्त कहते हैं कि आप अपनी-अपनी जगह ठीक हैं लेकिन परमात्मा एक है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

होय एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाई
हर नामे की होवो जोड़ी, गुरुमुख बैठो सफा बिछाई

आप इकट्ठे होकर बैठें, परमात्मा की भक्ति करें। परमात्मा हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई नहीं, न ही वह अमेरिका में रहता है। परमात्मा तो सबके अंदर रहता है। हर औरत-मर्द, हर समाज का आदमी उससे मिलने का हकदार है। सन्त-महात्मा हमें प्यार का संदेश देते हैं कि देखो

प्यारेयो, परमात्मा एक है और परमात्मा से मिलने का साधन–तरीका भी एक है लेकिन हम अपने आप परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

घर में घर दिखाए दे, सो सतगुरु पुरुख सुजान
पंच शब्द धुनकार धुनते, बाजे शब्द निशान

सन्त यह नहीं कहते कि आप हमें गुरु या पीर कहें। आप हमें अपना भाई, दोस्त या बुजुर्ग कुछ भी कह लें। सब सन्तों ने संसार में अपने आपको नीचा कहकर समय व्यतीत किया। आप गुरु नानकदेव जी की हिस्ट्री पढ़कर देखें, वे कहते हैं, ''मैं दासों का दास हूँ।'' हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी संगत को नमस्कार करते थे, ज्यादा से ज्यादा नम्रता भरे लफ्ज बोलते थे। इसी तरह हमारे सतगुरु कृपाल सिंह जी महाराज ने भी अपने आपको दासों का दास कहा। उन्होंने सारी जिंदगी किसी से यह नहीं कहा कि मैं कुछ हूँ। उन्होंने गुरु का यश गाया और सदा यही कहा कि हुजूर की दया–मेहर है।

परमात्मा से मिलने का रास्ता इस शरीर के अंदर है, सतगुरु इस शरीर में हमें वह वस्तु दिखा देते हैं। वह शब्द पाँच मंजिलों से आता है, शब्द तो एक ही है, जो सच्चखंड से उठता है। कबीर साहब ने भी कहा हैः

पंजे शब्द अनाहद वाजे, संगे सारंग पाणी
कबीर दास तेरी आरती, कीन्ही निरंकार निरवाणी

सारे सन्तों ने इसलिए उन्हें पाँच 'शब्द' कहकर बयान किया है क्योंकि यह 'शब्द' पाँच मंजिलों से आता है। जिस तरह दरिया पहाड़ में से निकलता है तो शुरु में उसकी आवाज और किस्म की होती है, जब वही पानी पत्थरों में से होकर निकलता है तो उसकी और किस्म की आवाज होती है, जब वही पानी साफ जमीन पर आ जाता है तो उसकी आवाज और किस्म की हो जाती है। जब वही पानी समुंद्र में गिरता है तब पानी में

पानी बजता है तो उसकी कोई और आवाज हो जाती है। पानी एक ही है लेकिन जैसी जमीन होती है उसमें से वैसी ही आवाज पैदा हो जाती है। मुसलमान उसे पाँच कलमें कहकर बयान करते हैं।

सन्त–महात्मा हमसे जाति नहीं छुड़वाते, न किसी खास किस्म का पहनावा पहनवाते हैं, वे अपनी तालीम की कोई फीस नहीं लेते। यहाँ हमारे अंदर ख्याल आता है कि नाम लेना क्या मुश्किल है, महात्मा मुफ्त में ही नाम दे देते हैं। जब जाएंगे तब नाम ले आएंगे लेकिन यहाँ आकर हमारे कर्म फिर अटक जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक सतगुरु तिन्हां मिलाया, जिन्हां धुरो पया संजोग

चाहे महात्मा घर में पैदा हो जाएं, चाहे घर के नजदीक रहने लग जाएं, हमें ऐतबार ही नहीं आता। आप बड़े–बड़े महात्माओं की हिस्ट्री पढ़कर देख लें। गुरु अर्जुनदेव जी के बड़े भाई पृथ्वीचंद ने उस वक्त की हुकूमत से अर्जुनदेव जी को बहुत कष्ट दिलवाए। दुनिया ने अर्जुनदेव जी को परमात्मा समझकर फायदा उठाया लेकिन उनके सगे भाई ने उन्हें नहीं माना, यह भाग्य की बात है। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे, भेंटया पुरख रसिक बैरागी
मिटया अंधेर मिलत हर नानक, जन्म जन्म की सोई जागी

जब हमारे जन्मों–जन्मों के कर्म जाग जाते हैं फिर हमें समझ आती है।

खालक थावों भुल्ला मुट्ठा।। दुनीआं खेल बुरा रूठ तुट्ठा।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा को भूल गया दुनिया के साथ मौहब्बत कर ली लेकिन दुनिया साथ नहीं देती। दुनिया के बहुत खेल देखे, सारी जिंदगी आँखों को तसल्ली नहीं हुई। राग सुन–सुनकर कान तृप्त नहीं हुए। लोगों की निन्दा कर–करके जुबान तृप्त नहीं हुई। इसी तरह नीचे की इन्द्रियाँ भी स्वाद ले–लेकर तृप्त नहीं हुई। आखिर सारी इन्द्रियाँ जवाब दे जाती हैं, जिस तरह कोई रूठा हुआ आदमी दूसरी

तरफ मुँह कर लेता है। जब बीमारी आती है, बुजुर्ग हो जाते हैं जिन इन्द्रियों से हम हँसकर काम लेते थे उनसे भी घृणा आने लग जाती है। दुनिया के खेल देखकर तसल्ली हो गई फिर भी परमात्मा को याद नहीं करता।

सिदक सबूरी संत न मिलयो वतै आपण भाणीआ।।

अगर किसी तरह सन्त के पास आ भी गया तो सोचता है कि इस सन्त के पास मेरे जितनी जमीन नहीं, यह सन्त मेरे जितना पढ़ा-लिखा नहीं। मैं अक्ल वाला हूँ, मेरी ज्यादा इज्जत है, इसके पास कुछ नहीं तो यह मुझे क्या देगा? ऐसी बातें सोचकर वहाँ से चला आता है। एक आदमी खाली झोली लेकर आता है, मालिक के प्यारे उस झोली को भर देते हैं। यह तो अपने-अपने बर्तन का सवाल है।

इसमें कोई शक नहीं कि मेरे गुरुदेव के आगे-पीछे बहुत राजा-महाराजा घूमते थे। दुनिया की बड़ी से बड़ी हस्ती भी उनके चरणों में सिर झुकाती थी। एक ऐसी भी आत्मा थी जो बचपन से उनके इंतजार में थी जिसके दिल में यह ख्याल था कि किसी न किसी तरह ऐसी हस्ती मिले जो इस आत्मा की तपत को बुझा दे।

बुल्लेशाह ने कहा था, ''यहाँ लम्बी-लम्बी नमाजों का काम नहीं, प्यार से सिर झुकाया ही काफी होता है। जिसके अंदर प्यार है, जो गुरु के आगे सिर झुकाना जानता है वह मेहनत भी करेगा।''

जब मैं अपने गुरुदेव से मिला तो मैंने उनसे यह नहीं पूछा आपकी क्या जाति है, आपका कौनसा गाँव है? लेकिन हम तो हजारों ही सवाल करते हैं। भजन पर बैठे हुए भी खुष्क हो जाते हैं। मैं बचपन में सुखमनी साहब पढ़ता था, उसमें एक तुक आती है:

आठ पहर जो हरि हरि जपे, हरि का भगत प्रगट नहीं छिपे

जब मैं कई साल सुखमनी साहब पढ़ता रहा तो मेरे दिमाग में बार–बार यह सवाल घूमता था कि तू तो बहुत बड़ा भक्त है, तू अभी प्रकट नहीं हुआ। लोगों को पता ही नहीं लगा लेकिन मुझे अपनी कमजोरी का ज्ञान नहीं था कि भक्त कहाँ जाकर बनता है, कौन भक्त होता है? जब हुजूर सच्चे पातशाह मिले तब पता लगा कि मैं तो किसी बाग की मूली भी नहीं था, भक्ति का रास्ता ही बाद में मिला।

मैं हिन्दुस्तान तो क्या गंगानगर के लोगों को भी नहीं जानता था। दिल्ली का कोई आदमी बाँह खड़ी करके यह नहीं कह सकता कि हमने आपको दिल्ली में देखा था। मैं अमेरिका, कनाडा भी गया वहाँ भी लोगों से पूछा, ''क्यों भई, कोई अजायब को जानता था?'' कौन कहेगा जब कोई जानता ही नहीं था।

आप सोचकर देखें, कौनसी ताकत है जो खबर करती है। मैं सतसंगियों को सलाह दिया करता हूँ कि आप लोग भजन करें आप में से खुशबू आएगी, वह खुशबू आपके घर के लोगों और पड़ोसियों को चढ़ जाएगी लेकिन हम भजन नहीं करते हमें अपने में से ही खुशबू नहीं आती तो किसी और को क्या आएगी।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे कि इत्र बेचने वाला बेशक अपने इत्र की डिब्बी को न ही खोले फिर भी कभी गलती से ढक्कन खुला रह जाता है, उसकी खुशबू नजदीक रहने वालों को आ जाती है। यही हालत हमारे भजन की है अगर हम भजन करते हैं तो उसकी खुशबू जरूर जाती है, वह खुशबू सात समुन्द्र पार कर जाती है।

जब मेरे गुरुदेव इस आत्मा पर बख्शीश करने लगे तो उन्होंने कहा, ''इसमें से खुशबू आएगी और वह खुशबू सात समुन्द्र पार कर जाएगी।'' उनके पास रहने वाले लोगों ने कहा कि महाराज जी को काम लेने की बहुत समझ है इसलिए इनकी तारीफ कर रहे हैं। क्या कभी इंसानों में से

भी खुशबू आई है? जब वही खुशबू लोगों को चढ़ी, दुनिया को पता लगा तो वही लोग मेरे पास आकर कहने लगे, ''हमने सुना है कि आप कनाडा जाते हैं?'' हालाँकि मैं वहाँ नहीं गया था। मैंने उनसे कहा कि मैं कनाडा का नाम आपसे सुन रहा हूँ। उन्होंने कहा कि आपका स्वरूप वहाँ जाता है। मैंने कहा कि आप इमीग्रेशन वालों से कहें यह तो उनकी ड्यूटी है।

अगर वे लोग यह समझते कि कृपाल परमात्मा है, यह गरीबों की झोली भरता है। यह चाहे तो बंदो में से क्या लकड़ी में से भी खुशबू ला सकता है वे सारे चंदन बन सकते थे, लेकिन हमारे मन ऐतबार नहीं करते कि सन्त जो कहते हैं वह हो जाएगा। हम सन्तों के पास जाते हैं, हमारे अंदर सब्र होना चाहिए कि परमात्मा हमें जो दे दे हम उससे फायदा उठाएं।

जब बीबियाँ मिलती हैं तो कहती हैं घुटने दुखते हैं। मैं उन्हें समझाता हूँ, ''यह बुढ़ापे की तकलीफें हैं। आपके पास तो नाम है, आप नाम जपें।'' महात्मा हमें बताते हैं कि जिस दुकान पर हीरे हैं, आप वहाँ जाकर उससे कोयले माँगे तो वह कहाँ से देगा? सन्तों की दुकान पर नाम है, आप नाम जपें ताकि हमें संसार में न आना पड़े, न शरीर मिले न हमें पीड़ा हो। सन्त हमें अंधविश्वास नहीं देते वे कहते हैं, ''आओ करो और देखो।''

मौला खेल करे सभ आपे।। इक कढे इक लहर व्यापे।।

परमात्मा अपना खेल अपने आप ही करता है। वह किसी को अपने 'शब्द-नाम' के साथ जोड़कर संसार समुंद्र की लहरों में से निकालकर ले जाता है और किसी को लहर में ही ढकेल देता है। वह सच्चखंड में खुद ही फैसला करता है कि मैंने किसे अपने साथ मिलाना है। जिसे अपने साथ मिलाना है उसे सतसंग में लेकर आता है। जब अच्छा समय होता है तो हमें सतसंग की समझ आ जाती है कि सतसंग का क्या भाव है? नहीं तो हम सतसंग में बैठे रहते हैं हमें कुछ समझ नहीं आता।

मैं एक आदमी के बारे में बताया करता हूँ, उसका परिवार यहाँ बैठा है, वह मेरे पास कई साल से आ रहा है। उसने बताया कि मैं जब सतसंग में आता हूँ तो मुझे कोई बंदा दिखाई नहीं देता, थोड़ी देर ही दिखाई देता है फिर सतसंग में अंधेरा हो जाता है। मैंने उसे प्यार से सलाह दी कि तू श्रद्धा-प्यार से सतसंग सुन सब कुछ ठीक हो जाएगा। कुछ समय बाद जैसे-जैसे उसने नाम की कमाई की उसे दिखाई देने लगा। ऐसा नहीं कि वह बंदा अंधा था, यह उसके **कर्मों का अंधेरा** था। तुलसी साहब कहते हैंः

आए थे सतसंग में, गए नींद में खोए
पारस में परदा रहे, तो कंचन किस विध होए

बुरे कर्म आकर घेर लेते हैं, सतसंग में नींद आ जाती है, दिल उदास हो जाता है। मालिक अपने आप ही खेल करता है कि किसे अपने साथ मिलाना है और किसे विषय-विकारों की लहरों में फिर भेजना है।

ज्यों नचाए त्यों त्यों नच्चन सिर सिर किरत विहाणीआ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''यह कभी किसी योनि में तो कभी किसी योनि में नाच नाचता है। हम अपने-अपने कर्मों के हिसाब से दुःख-सुख का हिसाब दे रहे हैं, भोग रहे हैं।''

मेहर करे तां खसम ध्याईं।। संता संगत नरक न पाई।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा जिस पर मेहर करता है उसे महात्मा की सोहबत-संगत में लेकर आता है। जब सन्त-महात्मा देखते हैं कि यह तैयार है तो वे हमारी सुरत को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं, हम सदा के लिए नर्क की आग से बच जाते हैं।

मैंने कई बार गुरु नानकदेव जी की हिस्ट्री सुनाई है कि वह अपने एक सेवक के पास जाया करते थे। सन्तों को अपने सेवकों की खातिर काफी कुछ करना पड़ता है। वे जानते हैं कि हम ही इन गरीब आत्माओं

की जिंदगी बना सकते हैं। गुरु नानकदेव जी का वह सेवक जमींदार था। उन्होंने उससे कहा, ''प्यारेया, तू नाम जपा कर।'' लेकिन वह नाम नहीं जपता था, घर के कारोबार में ही लगा रहता था।

मैंने शुरु में बताया था कि जीव अपनी भावना की वजह से ही संसार में आता है। जिस घर में आज पिता है, कल उस घर में बैल बनकर आ जाता है, बिल्ली बनकर रहता है, कभी कुत्ता बनकर उस घर की रखवाली करता है। किसी को पता नहीं कि पहले इस घर में मेरा क्या ओहदा था?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव ज्यादा दूर जाकर जन्म नहीं लेता, ज्यादा से ज्यादा पड़ोस तक ही जाएगा।'' मौत किसी का लिहाज नहीं करती। उस जमींदार सेवक को जानवरों के साथ प्यार था। वह उस घर में बैल की योनि में आ गया, घर के लोगों ने उससे बहुत काम लिया। अपने भक्त की खातिर गुरु नानकदेव जी ने उस घर के लोगों से कहा कि बैल के साथ बात करनी है। बच्चों ने गुरु नानकदेव जी को अपने पिता का गुरु समझकर उनका आदर किया और कहा आप चाहे जितनी बातें कर लो। उन्होंने बैल के कान में कहा, ''चल अब तुझे ले चलें।'' बैल ने कहा, ''मुझे अपने बच्चों की बहुत फिक्र है, इनका दूसरा बैल कमजोर है, वह काम नहीं दे सकता।''

मौत किसी का लिहाज नहीं करती फिर वह उसी घर में कुत्ता बनकर आया। गुरु साहब रात को उसके घर गए और उससे कहा, ''सज्जना, अब तेरा क्या विचार है?'' उसने कहा, ''ये सारे सोते रहते हैं, बहुएं भी बेफिक्र हैं, मैं सारी रात जागकर घर की रखवाली करता हूँ।'' गुरु साहब चुप रहे। बच्चा सुबह हल जोड़ने लगा, कुत्ते की पूँछ पर पैर पड़ गया, कुत्ते को दर्द हुआ तो कुत्ता लड़के के ऊपर भौंका और उसका मुँह लड़के की टाँग पर लग गया। लड़के के हाथ में कुल्हाड़ी थी उसने कुत्ते के सिर में मारी, कुत्ता मर गया।

उसका मोह उस घर में ही था, वह उस घर में साँप बनकर आ गया। सारा परिवार बाहर गया हुआ था, पोता घर में सोया हुआ था वह रोने लगा। साँप ने सोचा कि घर में कोई नहीं है, मैं इसे चुप करवाऊं लेकिन वह भूल गया कि मेरी तो योनि ही ऐसी है। तभी घर के लोग आ गए तो उन्होंने देखा कि साँप बच्चे को खा जाता। घर के लोगों ने शोर मचा दिया और साँप को मार दिया। उसका प्यार घर में ही था आखिर कीड़ा बनकर उस घर की गंदी नाली में रहने लगा।

जब वह कीड़े की योनि में गया, उस समय गुरु नानकदेव जी लाहौर में थे। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर मरदाना से कहा कि हमें जरूरी काम से जाना है। उन्होंने मरदाना को सारी हिस्ट्री बताई कि हमारा फलाना शिष्य अब गंदी नाली का कीड़ा बना हुआ है। वहाँ पहुँचकर गुरु नानकदेव ने मरदाना को नाली में से थोड़ा सा पानी निकालने के लिए कहा, मरदाना ने पानी बाहर निकाला। गुरु नानकदेव जी ने अपनी दृष्टि से उसे उस कीड़े की योनि से मुक्त किया। मालिक के प्यारे सेवक की खातिर गंदी नाली में भी हाथ डालते हैं और सेवक को नर्कों से लेने के लिए भी जाते हैं।

हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी महाराज की एक आत्मा इसी तरह नर्क में चली गई। वे भी नर्क में गए, वहाँ जाकर उन्होंने उस आत्मा से पूछा, ''क्यों भई, सिमरन याद है?'' उस आत्मा ने कहा, ''नहीं।'' फिर उन्होंने उससे पूछा, ''मेरी आवाज सुनाई दे रही है?'' उसने कहा, ''हाँ।'' उन्होंने कहा कि तू मेरी आवाज के पीछे चली आ। उस आत्मा ने कहा कि अब मुझे नर्क भी दिखाई दे रहे हैं और जो जीव नर्क में कष्ट उठा रहे हैं वे भी दिखाई दे रहे हैं।

जब परमात्मा मेहर करता है तभी हम परमात्मा की भक्ति करते हैं, सन्तों की बात पर ऐतबार करते हैं फिर हम नर्कों की आग से बच जाते हैं।

अमृत नाम दान नानक कौ गुण गीता नित वखाणीआ।।

आप कहते हैं कि सन्तों के पास 'शब्द–नाम' की दवाई है जिसे खाकर हम नर्कों से बच जाते हैं। सन्त जिसके अंदर अपना नाम रख देते हैं उस जीव को काल नर्कों में नहीं डाल सकता। उसे वापिस अपने घर सच्चखंड पहुँचने का एक किस्म का वीजा मिल जाता है। सब महात्माओं ने 'शब्द–नाम' की महिमा गाई है। मालिक कृपा न करे तो हम इस तरफ आ ही नहीं सकते। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

हम सन्तन की रैण प्यारे हम सन्तन की शरणा
सन्त हमारी ओट सताणी सन्त हमारा गहणा
सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी सन्तन स्यो व्यवहारा
सन्तन मौको पूँजी सौंपी ते उतरयो मन का धोखा
धर्मराय अब क्या करेगो जब फाटयो सगलो लेखा

हम अपने आपको सन्तों के पैरों की खाक समझते हैं, हम उनकी शरण में हैं चाहे वे हमें भूखा रखें, चाहे प्यासा रखें। हमें सन्तों की ओट है, सन्त ही हमारा श्रृंगार हैं। अब हमारा लेन–देन और व्यवहार भी सन्तों के साथ है। सन्तों ने हमें नाम की पूँजी सौंपी तो जन्मों–जन्मों से धोखा देने वाला मन शान्त हो गया।

सन्त जब हमें नाम देते हैं तो वे हमारे अंदर इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि वे अंदर 'शब्द रूप' होकर बैठ जाते हैं। हम दुनिया के कर्मों का हिसाब–किताब भी चुकाते रहते हैं और अंदर तरक्की भी करते रहते हैं। सुख पाकर परमात्मा को भूलते नहीं और दुख में परमात्मा की भक्ति नहीं छोड़ते। दुनिया निन्दा करती है तब भी परमात्मा की भक्ति करते हैं।

परमात्मा, महात्मा के जरिए हमारे अंदर नाम की दात टिकाता है। गीता के अंदर भी 'शब्द–नाम' की महिमा है। सब सन्तों ने नाम की महिमा गाई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि आप भक्ति के बिना परमात्मा से नहीं मिल सकते। वे तो यहाँ तक कहते हैं:

जिनी ऐसा हरि नाम न चेतया से काहे जग आए
मनमुखां नू फिर जन्म है नानक हर भाए

नाम को आँखे देख नहीं सकती, कान सुन नहीं सकते और जीभ उसे अदा नहीं कर सकती, उस नाम की महिमा ब्यान नहीं की जा सकती। कलयुग में परमात्मा ने वह गुप्त नाम हर घट के अंदर रखा हुआ है।

गुप्ते नाम वरते विच कलयुग घट घट हरि भरपूर रहया

गुरुग्रंथ साहब के 1430 पन्ने हैं, अगर नाम लिखने वाली चीज होती तो उसमें जरूर लिख देते। गुरु ग्रंथ साहब के हर अक्षर में नाम की महिमा, गुरुमुखों की महिमा लिखी है लेकिन यह भी बताया है कि वह नाम गुप्त है। परमात्मा ने वह गुप्त डोरी हमारे अंदर लटकाई हुई है। जो सन्त–महात्मा मालिक से मिल चुके होते हैं, मालिक का रूप हो चुके होते हैं मालिक की तरफ से उन्हें यह इजाजत मिल जाती है कि आप जीवों को सतसंग सुनाएं, नाम दें और मेरे साथ जोड़ें। वे नाम की डोरी से हमारी आत्मा को जोड़ देते हैं। आप कहते हैंः

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी

जीव उस डोरी को तोड़ना चाहे तोड़ नहीं सकता, छोड़ना चाहे छोड़ नहीं सकता क्योंकि जो रस परमात्मा की भक्ति में जुड़ने से मिलता है, उस तरह की लज्जत और कहीं नहीं मिलती। सन्त–महात्माओं ने नाम के गीत गाए है। यह हमारे बस में नहीं कि हम अपनी मर्जी से नाम प्राप्त कर लें, यह परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है। गुरु साहब कहते हैंः

जिसका गृह तिस दीया ताला कुंजी गुरु सौंपाई
अनिक उपाय करे नहीं पाए बिन सतगुरु शरणाई
जिनके बंधन काटे सतगुरु तिन साध संगत लिव लाई
पंज जना सो मंगल गाया नानक भेद न भाई

जिस परमात्मा ने यह शरीर बनाया है उसने ही ताला लगाया हुआ है। पाँच डाकु जो परेशान करते थे वे भी परमात्मा की भक्ति की तरफ

लग जाते हैं। ऐसे इंसान में और परमात्मा में कोई भिन्न-भेद नहीं, उसमें परमात्मा वाले ही गुण आ जाते हैं।

दरवेशां दा जीवणा रूखां दी जीराण

पेड़ हर किसी को छाया देता है चाहे कोई उसे काटे या पानी दे, वह काटने वाले से भी अपनी छाया को दूर नहीं करता। इसी तरह चाहे कोई सन्त-महात्माओं की निन्दा करे चाहे कोई उन्हें बुरा कहे लेकिन वे सबके साथ एक समान प्यार करते हैं। सन्तों की नजर आत्मा पर होती है, सबके अंदर एक ही आत्मा है बुराई मन में है। मन की वजह से ही हम अलग-अलग हैं, आत्मा की वजह से एक हैं।

सन्त-महात्मा हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हुए यह समझाते हैं कि यह मन, ब्रह्म की अंश है, त्रिकुटी का रहने वाला है, यह अपने घर को भूलकर विषय-विकारों के जंगल में पागलों की तरह फिर रहा है। अगर आपने मन को मित्र बनाना है तो सबसे पहले मन की आदत के बारे में सोचें कि मन किस चीज का आशिक है?

हमारा मन लज्जत का आशिक है, यह दुनिया की लज्जतों में फँसा हुआ है। सबसे ऊँची और सुच्ची लज्जत 'शब्द-नाम' की है अगर हम इसे यह ऊँची और सुच्ची लज्जत दे देंगे तो यह मन जो हिरन की तरह विषय-विकारों में भटक रहा है उस तरफ से हट जाएगा।

सन्त कहते हैं कि आप मेहनत करके मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आएं, इसे शब्द का रस दें। शब्द की लज्जत देने से यही मन आपका मित्र बन जाएगा। हमें भी चाहिए कि हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

19 जनवरी 1985
मुम्बई

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

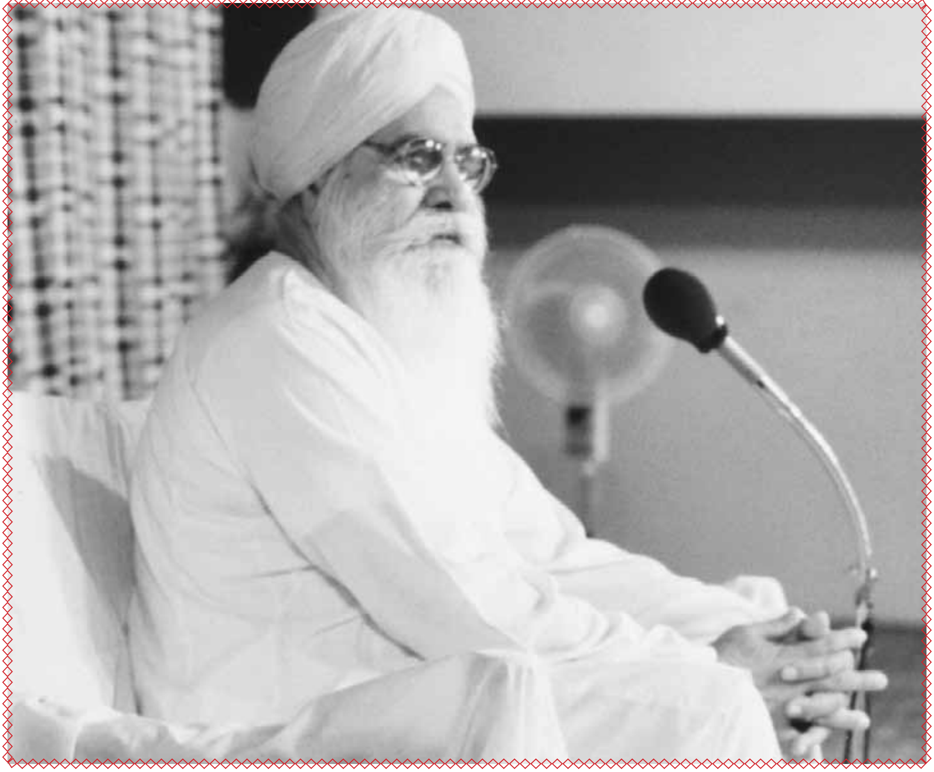

एक प्रेमी: *क्या आखिर में सारी आत्माएं अपनी जाति छोड़कर परमात्मा में जज्ब हो जाएंगी या उस समय भी वे अलग-अलग जातियों में रहेंगी और भजन-सिमरन करेंगी?*

बाबा जी: हाँ भई, जाति-पाति का ताल्लुक हमारे वजूद के साथ है, आत्मा के साथ जाति का कोई ताल्लुक नहीं। मैं अक्सर सतसंगों में बताया करता हूँ कि आत्मा न हिन्दु है, न मुसलमान है, न सिक्ख है, न ईसाई

है, न अमेरिका या हिन्दुस्तान की रहने वाली है। आत्मा को आग जला नहीं सकती, शस्त्र इसे काट नहीं सकता। आत्मा न औरत है न मर्द है, लिंग भेद दसवें द्वार तक है। आप जब पारब्रह्म से ऊपर जाएंगे वहाँ लिंग भेद भी खत्म हो जाता है।

***एक प्रेमी**: हर नया भजन पहले लिखे हुए भजनों से ज्यादा खूबसूरत है। क्या हमें कभी आपकी मधुर आवाज में भजन सुनने का मौका मिलेगा?*

बाबा जी: आपको पता ही है कि लिखवाने वाला ही लिखवा रहा है, यह मेरे अपने वश की बात नहीं। पहले टूर पर आपको मेरे भजन सुनने का काफी मौका मिला है। मुझे शब्द बोलने का काफी शौक था लेकिन इस वक्त मेरी आवाज उस तरह की नहीं है। अब भजनों पर रोक लगी हुई है, इन दिनों मैनें कोई नया भजन नहीं बोला।

पप्पू और कैंट कहते हैं कि अभी आप नये भजन लिखना बंद कर दें, मैं खामोश हूँ। मेरा दिल करता है कि मैं अपने प्यारे गुरु की सिफ़त हर सतसंग में नये तरीके से ही करूँ। कोई सेवक गुरु की सिफ़त नहीं कर सकता। सहजो बाई ने कहा था, ''अगर मैं सारी धरती का कागज बना लूं, सारी वनस्पति की कलम बना लूँ और सारे समुद्रों की स्याही बनाकर गुरु की सिफ़त लिखूं तो वह लिखी नहीं जा सकती क्योंकि गुरु की महिमा बेअंत है।''

सब सन्तों ने भजन अपने गुरु की तारीफ में, नाम की तारीफ में, सतसंग की तारीफ में लिखे हैं। वे इन लेखनियों के जरिए ही संगत के आगे अपने आभार का इजहार करते हैं।

***एक प्रेमी**: सन्त जी, गुरु के साथ प्यार करना क्या है जबकि हम हौमें–अहकार से भरे हुए हैं?*

बाबा जी: हाँ भई, जब कोई अभ्यासी परमात्मा से मिलने की कोशिश करता है तो मन की फौजें– काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँचों डाकु पीछे पड़ जाते हैं। रूहानियत पर चलना या गुरु के साथ प्यार करना मन के साथ लड़ाई मोल लेना है। तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम

मन बहुत हठीला दुश्मन है इसे जिस तरफ से हटाओ यह उसी तरफ जाता है। रण में तो दो मिनट का काम है मर जाता है या मार देता है। भक्ति करना बिना खंडे संग्राम है लेकिन जो श्रद्धावान होकर इस तरफ लगते हैं उनकी पीठ पर पूरा गुरु होता है, गुरु ने हर सेवक को 'शब्द–धुन' के साथ लेस किया होता है। अगर हम इस संग्राम को जीत लेते हैं तो सतगुरु परमात्मा हमें परमपद का ईनाम देते हैं।

***एक प्रेमी**: बाबा जी, आपका कोई गुरुमुख चेला है?*

बाबा जी: मैं तो सभी को गुरमुख बनाने के लिए कमर कसकर बैठा हुआ हूँ। आप हिम्मत करें, मुझे सहयोग देकर ज्यादा से ज्यादा भजन करें।

***एक प्रेमी**: कुदरत में जज्ब होने का क्या मतलब है?*

बाबा जी: हाँ भई, *आप छोड़ गुरु माहे समाहे*। अपने आपको छोड़कर शब्द में समा जाने को कुदरत, शब्द, नाम या भगवान कुछ भी कह लें। आप उसे किसी भी नाम से पुकार सकते हैं।

***एक प्रेमी**: अगर अभ्यास के समय काल की कोई ताकत या स्वरूप आ जाए तो क्या सतसंगी को पता लग सकता है कि यह काल की ताकत है?*

बाबा जी: हाँ भई, यही परखने के लिए आपको 'शब्द' का भेद दिया जाता है। सन्तों ने आपको किताबी सिमरन नहीं दिया, अपना कमाया

हुआ सिमरन दिया है। आप ये पाँच पवित्र नाम बोलें अगर काल की कोई ताकत होगी तो वह गायब हो जाएगी और आपके अंदर गुरु का स्वरूप ही कायम रहेगा। कई बार काल, गुरु का रूप धारण करके भी आ जाता है।

जब महाराज सावन सिंह जी आर्मी में थे, एक बार घोड़े से गिरकर उनकी टाँग टूट गई। उस समय डॉक्टरों ने कहा अगर आप मीट–शराब इस्तेमाल करेंगे तभी आपकी टाँग जुड़ सकती है वरना नौकरी भी छोड़नी पड़ेगी। वे अभ्यास में बैठे तो फौरन काल, बाबा जयमल सिंह जी का रूप धारण करके आ गया और कहने लगा, ''बीमारी के दिनों में तो मीट–शराब पी लेने में कोई हर्ज नहीं।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि मैंने बाबा जयमल सिंह जी को तार दी थी कि डॉक्टर मीट–शराब का इस्तेमाल करने के लिए कहते हैं। क्या मैं इनका हुक्म मानूँ, आपका क्या हुक्म है? जब मैंने पाँच पवित्र नामों का सिमरन किया तो काल गायब हो गया। थोड़ी देर बाद बाबा जयमल सिंह जी की तार आ गई। तार में उन्होंने कहा कि सन्त एक बार ही हुक्म देते हैं जो तुझे मिल चुका है, मीट–शराब इंसान की जिंदगी नहीं बचा सकते। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं:

शब्द सुणें तो दूरो भागे

सन्त सदना ने कहा था अगर गीदड़ो से डरना है तो शेर की शरण में जाने का क्या फायदा? इसी तरह अगर गुरु का शब्द, काल की ताकत को दूर नहीं करता तो वह गुरु हमें किस तरह तारेगा? गुरु के शब्द में अथाह शक्ति होती है अगर सतसंगी भरोसे के साथ पाँच पवित्र शब्दों का उच्चारण करता है तो काल की कोई भी शक्ति उसे गुमराह नहीं कर सकती, उसके आगे टिक नहीं सकती।

एक प्रेमी: *अच्छे माता–पिता बनने के बारे में कुछ बताएं हालाँकि इस बारे में आप पहले भी बहुत कुछ बता चुके हैं?*

बाबा जी: हाँ भई, इस बारे में मैंने बहुत कुछ बोला है। अच्छा तो यह है कि आप सन्तबानी मैगजीन पढ़ें जिनमें ऐसे लेख आमतौर पर छपते रहते हैं। आपको नई माता बनने का मौका मिला है, आपका प्रश्न स्वाभाविक है मैं इसका भी जवाब देता हूँ।

हिन्दुस्तान का मशहूर वाक्या है कि फरीद की माता ने ही फरीद को परम सन्त बनाया था। फरीद की माता नाम की भक्ति करती थी। वह हमेशा फरीद को शरारतें करने से हटाती और कहती कि खुदा की भक्ति करनी चाहिए। बच्चों को आमतौर पर मीठी चीजों से बहुत लगाव होता है। फरीद ने अपनी माता से पूछा, ''क्या खुदा की भक्ति करने से खंड मिल जाएगी?'' फरीद की माता ने कहा, ''हाँ बेटा, खंड मिल जाएगी।''

जिस तरह माता रोज अभ्यास में बैठती थी उसी तरह उसने बोरी बिछाकर फरीद के ऊपर कपड़ा डालकर उसे अभ्यास में बिठा दिया। थोड़ी देर बाद माता ने फरीद को उठाकर कहा, ''खुदा खंड रखकर गया है तू खा ले।'' दो–चार दिन तो माता को संघर्ष करना पड़ा। धीरे–धीरे फरीद को खंड मीठी लगने लगी। फरीद खुद बोरी उठाकर अभ्यास के लिए चल पड़ता और कहता, ''माता मैं खुदा से खंड ले लूँ फिर कोई कारोबार करूँगा।'' माता कमाई वाली थी, वह रोज फरीद को अभ्यास में बिठाती जिससे फरीद की सुरत अंदर लगने लगी। फरीद ने माता से कहाः

शक्कर खंड नवात गुड़ माखो माजा दुध
सब्बे वस्तु मिट्ठियां पर रब न पुज्जण तुध

मानते हैं कि शहद मीठा है, खंड मीठी है और भैंस का दूध भी मीठा है ये सब चीजें मीठी हैं लेकिन माता जो रस नाम जपने से आता है, वह इन चीजों में नहीं आता। फरीद की जिंदगी बनाने वाली उनकी माता थी।

मैं बताया करता हूँ कि माता–पिता को अपने बच्चों को सन्तमत के उसूलों के मुताबिक पालना चाहिए। परमात्मा ने आपको ये भोली आत्माएं

अमानत के रूप में बख्शी हैं। सतसंगियों के घर में खास आत्माएं आती हैं। पशु–पक्षियों के बच्चों पर भी माता–पिता का असर होता है, जिस तरह पशु–पक्षियों की अच्छी नस्ल है तो उनके बच्चे भी अच्छे होते हैं।

किसी लड़की का बादशाह के लड़के के साथ प्रेम हुआ लेकिन दोनों के माता–पिता उनकी शादी के लिए नहीं माने। उन दिनों में आज की तरह जीप–कार के साधन नहीं थे। लड़की ने कहा कि मैं ऊँटनी लेकर आ जाऊंगी हम दोनों उस पर चढ़कर चले जाएंगे। वह लड़की ऊँटनी ले आई और वे रात को उस पर चढ़कर जाने लगे। रास्ते में एक नदी आई। लड़की ने कहा, ''इसकी नकेल खींच इसे आदत है यह पानी में न बैठ जाए, फिर जल्दी से कहने लगी कि इसकी माँ को भी यही आदत थी।''

लड़के ने सोचा कि जब पशुओं पर माता–पिता का इतना असर है कि इसकी माँ पानी में बैठती थी आज बेटी भी पानी में बैठ रही है। मैं इस लड़की को लेकर जा रहा हूँ। आखिर हम शादी–शुदा जीवन व्यतीत करेंगे इसके पेट से लड़की होगी अगर वह बदमाश हुई तो लोग मुझे बदनाम करेंगे कि यह फलाने की लड़की है। लड़के ने उस लड़की को प्यार से कहा, ''मैं घर में कोई खास चीज भूल आया हूँ, अभी बहुत रात बाकी है हम जाकर ले आते हैं।''

लड़की को क्या पता था कि यह मन बदल चुका है। जब घर के पास आए तो लड़के ने उससे कहा, ''परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत मेहर की है, हम बुराई से बच गए हैं। तू अपने घर आराम कर और मैं अपने घर आराम करता हूँ।'' पशु–पक्षियों के बच्चों पर भी माता–पिता का असर होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो माता–पिता अपने बच्चों के सामने कोई बुरा कर्म करते हैं या गलत उदाहरण बनकर पेश आते हैं वे अपने बच्चों का भविष्य खराब कर रहे होते हैं। सबसे पहले माता–पिता नेक बनें, बच्चे अपने आप ही नेक बन जाते हैं।'' ***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

औखद आए रास जे विच आप खड़ोया

वही दवाई रास आएगी जिसमें परमात्मा खड़ा हो जाए। आखिर में परमात्मा का ही आसरा है तो क्यों न पहले ही परमात्मा को याद किया जाए, क्यों न पहले ही परमात्मा को खुश किया जाए?